ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

अनंतगोपाल शेवडे के कहानियों में मानवतावाद

शोध सारांश :

अनंतगोपाल शेवडे सर्वप्रथम गांधीवादी विचारक और चिंतक हैं, तदनंतर, संपादक, उपन्यासकार, और कहानीकार । इनके कहानियों में मानवीय व्यवहारों के भिन्न-भिन्न यथार्थवादी एवं आदर्शवादी चित्र अंकित किए हैं । शेवडेजी के कहानियों के चरित्र में दया, ममता और प्रेम का समन्वय है । उनकी कहानियों का प्रमुख उद्देश्य - सामाजिक विकृतियों के प्रति स्वस्थ एवं सबल विद्रोही स्वर है । नैतिकता एवं आदर्श उनके साहित्यिक विशेषताएँ हैं ।

संकेताक्षर :

विचारक, पतनोन्मुख, असंभाव्य, संभावना, सहानुभूति, मनमौजी, संकुचित, गुणक्रम, आदर्शोन्मुख ।

प्रस्तावना :

अनंतगोपाल शेवडे का जन्म एक मध्य परिवार में ८ सितंबर सन् १९११ को मध्यप्रदेश के छिंदवाडा जिले के सौंसर नामक गाँव में हुआ । आपकी मातृभाषा मराठी थी । भारतीय संस्कृति तथा अध्यात्म और महात्मा गाँधी के दर्शन से आप प्रभावित थे । उनका मानना था कि - भाषा मानव की सबसे बडी शक्ति है और वही उसे सृष्टि के अन्य प्राणियों से एक अलग और महत्वपूर्ण भूमि प्रदान करती है और वही उसमें बसी हुई भव्य-दिव्य आत्मा की सृजनशीलता का एक मात्र माध्यम है और हिंदी भाषा भारतीयता में एकता निर्मित करने का सबसे बडा साधन है । शेवडेजी का साहित्य जीवन के अनुभवों का लिखित चित्र है । वे एक चिंतनशील भावुक मार्मिक

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

व्यंग्यकार हैं । वे पहले गांधीवादी विचारक और चिंतक हैं, बाद में संपादक उपन्यासकार और अंत में कहानीकार ।

कहानी साहित्य परिचय : उनके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । 'संतरों की डाली' में विविध रूप की छोटी-छोटी तेरह कहानियाँ संग्रहित हैं । जैसे संतरों की डाली, जज साहब का ओवरकोट, डॉ. सुनीता, चेती का ब्याह, अंडे के छिलके, सर्कस की लड़की, कारा के देवी, आस्तीन का सांप, संगमरमर का पेपरवेट, संजीवनी, घडी की चोरी, अन्धा प्रेम, पराई औरत और दूसरा 'संगम' में जो १९६२ में प्रकाशित है, इसमें मराठी लेखिका यमुना शेवडे तथा अनंत गोपाल शेवडे दंपति की कहानियाँ संगहित हैं और नीला लिफाफा, तीन कंकड, आकाशवाणी का प्रेम, रेशम की कमीज, सुनहरा फाउण्टेन पेन, प्रतीक्षा, तलाक का पत्र, चरित्रहीन ८ कहानियाँ संग्रहित हैं । इन कहानियों में मानवीय व्यवहारों के भिन्न-भिन्न यथार्थवादी एवं आदर्शवादी चित्र अंकित किए गए हैं । 'कारा की देवी' और चरित्रहीन' इन दो कहानियों में स्वातंत्रपूर्व क्रांति और उसमें शहीद हुए हमारे भारतीय युवकों का दर्द समाविष्ट है ।

* अनंतगोपाल शेवडे के कहानियों में मानवता :

१) हृदय परिवर्तन : 'घडी की चोरी' घटनात्मक मनोवैज्ञानिक - गाँधीवादी मानवतावादी कहानी है । महात्मा गांधी के हृदय परिवर्तन का आधार इस कथानक के मूल में है । विनोबा भावे द्वारा चोरों को साधारण मानव बनाना इस बात को सिद्ध करता है कि जन्मजात कोई पापी या पतित नहीं होता । परिस्थितियाँ उसे पाप करने और पतनोन्मुख होने में सहायता करती हैं । 'प्रत्येक मानव में ऐसे छिपे हुए तत्व रहते हैं जिन्हें जाग्रत किया जाय और उसके हृदय को छुआ जाय तो उसमें आश्चर्यजनक उन्नति हो सकती है । जिन्हें समाज पतित और पापी कहता है वे भी साधु चरित हो

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

सकते हैं । सहानुभूति, सहृदयता और प्रेम' [1] शेवडेजी ने इस कहानी में एक चोर को सहृदय मानव बनाया है ।

२) आदर्श प्रेम: 'कारा की देवी' एक स्वर कल्पनात्मक यथार्थवादी प्रेम कहानी है । राजनीतिक परिस्थिति पर चित्रित एक यथार्थ घटना पर आधारित एक युवती के आदर्श प्रेम की एक झलक इस कथा का मूल है । यह कहानी, स्वर-कल्पना (फैंटेसी) के शिल्प प्रयोग का मूल रूप ऐंद्र जालिक या जादूई दुनिया के कथा शिल्प से मिलता जुलता है । स्वर कल्पना में असंभाव्य संभावनाओं को प्राथमिकता दी जाती है । नयी कहानी में इस शिल्प का उद्देश्य सदोष-मानव तथा उसके द्वारा रचे जा रहे दोषयुक्त संसार दोनों के प्रति नया दृष्टिकोण उपस्थित करता है ।' [2]

जेल के बाहर रात के दो बजे एक छायामूर्ति, पहरेदारों के दिल में भय उत्पन्न करा देती है । इसमें कौतूहल, रहस्य और आतंक है । आतंक तब समाप्त होता है जब 'अलार्म' होकर सब सिपाही मशाले लेकर एकत्रित होकर देखते हैं कि यह भूत नहीं बल्कि एक युवती है । पर यह युवती इस भयंकर रात में यहाँ क्यों आयी है ? और उसकी बंद मुट्ठी में क्या है ? जब जोर जबरदस्ती का प्रसंग आया तब वह अपनी मुट्ठी खोलती है । मुट्ठी में बेला के फूल थे । फूल किस लिए ? अपने पति देवता अनिलकुमार की स्मृति पूजा के लिए । अनिलकुमार वह राजबंदी था जो किसी जेल में शहीद हो चुका था । इस प्रकार कहानी अंत में एक अजीब मृदता और तरलता में परिवर्तित हो जाती है । कहानी प्रारंभ से लेकर अंत तक कौतूहल से बढ़ती जाती है और मानवीय संवेदनाओं में बदल जाती है और इस कहानी में जेल के वातावरण का व्यंग्यात्मक वातावरण चित्रित किया है । 'तलाक का पत्र' यह कहानी दंपति प्रेम की मनोवैज्ञानिक सुखांत कहानी है । यह कहानी प्रेम की समस्या पर आधारित है जिसमें यह स्पष्ट किया है कि प्रेम का संबंध आत्मा से है, शरीर से नहीं । सच्चा प्रेम पात्र अपने प्रेम-बल से गलत रास्ते से जानेवाले अपने पति का भी

[1] शेवडे - पूर्णिमा - पृ. ३२
[2] पाण्डेय शशिभूषण - नयी कहानी शिल्पगत प्रयोग - पृ. १७३

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

हृदय परिवर्तित कर सकता है । कथानक में सजीवता लाने के लिए विस्मय, कौतूहल, आकस्मिकता का कलात्मक प्रयोग किया गया है । प्रस्तुत कहानी में रोचकता जरूर है, परंतु पत्नी प्रेम तथा पति भक्ति के आदर्श की स्थापना के लिए हवाई जहाज की दुर्घटना की योजना कुछ अस्वाभाविक लगती है । कहानी का अंत अत्यंत सुखद है - 'बात कुछ समझ में नहीं आई, पर जो कुछ समझ में आया वह इतना मीठा, इतना सुखद था जैसे बरसों से गुमी हुई कोई प्यारी चीज वापस मिल गई हो ।' [1]

३) मानवतावादी नेता : 'चरित्रहीन' कहानी में बाबू नवीन चंद्र एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने शुद्ध चरित्र के होते हुए भी चरित्रहीन कहे जाते हैं । राजनीति के अड्डे में फसनेवाले ऐसे लोग कम नहीं है । राजनीति के ऐसे वातावरण में भी शेवडे इस गांधीवादी पात्र की जय बताते हैं । नवीन चंद्र गांधीवादी होते हुए भी मानवतावादी नेता है जिनका संपूर्ण जीवन जनसेवा में बीता । वे सीधे-साधे, कर्तव्यनिष्ठ आदर्शवादी कार्यकर्ता हैं । परवे एकनिष्ठ और चरित्रवान भी हैं । जिसने उसको सही सत्य मार्ग बतला दिया वही नारी वेश्या होते हुए भी गुरु बनने लायक है । एक नारी के लिए कलंक सहनेवाला और अपने स्वार्थ को लात मारनेवाले, श्रेष्ठ गाँधीवादी नेता में नवीन चंद्र का उल्लेख करना होगा । एक वेश्या होते हुए भी प्रौढा मनुष्य की प्रवृत्तियाँ तथा स्वभाव जानकर उसे मार्गदर्शन करनेवाली वेश्या सचमुच एक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर सकती है । नवीन चंद्र ने वेश्या को एक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करा दिया है । नवीन चंद्र ने वेश्या को गुरु मानकर गांधीवादी आदर्श की स्थापना की है और वेश्या को नानवीयता का श्रेष्ठ आदर्श स्थान दिया है ।

४) गांधीवाद की प्रतिछाया : शेवडे गांधीजी के एक निष्ठ सेवक थे । जिससे उनके साहित्य में गांधीवाद की प्रतिछाया कोई विशेष बात नहीं है । 'जज साहब का ओवर कोट' का जज साहब न्याय जैसे महत्व का कार्य करनेवाला व्यक्ति होते हुए भी दयावान व्यक्ति है । वह पूरा मानव है । एक ओर चोर को दंड देकर अपने न्याय

[1] शेवडे - तलाक का पत्र - 'संगम कहानी संग्रह' - पृ. ९०

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

देवता का कर्तव्य पालन करता है । चोर (जोसेफ) सच्चा चोर नहीं, एक शरीफ व्यक्ति है उसका हृदय दया और सहानुभूति का पात्र है क्योंकि उसने चोरी स्वार्थी हेतु से नहीं बल्कि दूसरों की मदद के लिए की थी । इसलिए सजा काटकर आने पर अपना कीमती ओवर कोट उसे भेंट के रूप में देता है ।

इस प्रकार कर्तव्य और सेवा, दया का समन्वय जज साहब के चरित्र में निखार उत्पन्न करता है । वैसे ही मिस्टर जोसेफ रामदास एक मैकनिक था । परिस्थिति से गरीब परंतु हृदय से विशाल था । उसके चरित्र में दया, ममता और प्रेम का समन्वय है । एक गरीब औरत-निमोनिया और मलेरिया से बेहाल थी । खुद जोसेफजी की आर्थिक स्थिति भी उतनी अच्छी नहीं थी जो वह उसकी मदद करें । परंतु मदद करने की प्रबल इच्छा करने के कारण वह 'काण्टिनेण्टल स्टोर्स' में ओवरकोट की चोरी करता है । जेल जाता है, नौकरी से हाथ धोता है, यह उसका कृत्यनितांत मानवीय है । उसमें मानवता के संपूर्ण गुणों का समन्वय है । चोर में भी शरीफ व्यक्ति का चित्रण-गांधीवाद के विचारों को उच्चस्थधरा तल पर प्रतिष्ठित करता है । जोसेफ रामदास चोर होते हुए भी घृणा का पात्र नहीं है । ;घडी की चोरी' कहानी में घडी का मालिक और घडी चुरानेवाला पात्र दोनों भी गांधीवादी वृत्त के पात्र हैं । मालिक पूर्ण रूप से मानवतावादी गांधीवादी चिंतक है । उसकी मनुष्य स्वभाव पर बडी आस्था है, विश्वास है । इसलिए किसी को भी वे नीच, घृणित या त्याज्य नहीं मानते । इसलिए रातभर आश्रय देनेवाले आदमी ने चोरी की तो वे डाँवाडोल नहीं हुए । हथकड़ी में बंद चोर के साथ वह शराफत से पेश आता है उस पर वैचारिक परिणाम करता है । मालिक के इस वाक्य से - दीन दुखिया की मदद करना हराम है । आमतौर पर लोगों का यह ख्याल होगा और कोई मदद नहीं करेंगे । तब इस चोर का हृदय परिवर्तित होता है । वह पश्चाताप व्यक्त करता है जिससे चोर को फिर से नौकरी पर रखकर

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

उस पर उपकार करता है । अब वही चोर एक शरीफ आदमी बना और उसी मालिक की सेवा करता है जैसे मंदिर में पूजा कर रहा हो ?' [1]

५) आदर्श नारी चरित्रांकन : कालिंदी देवी, मिस जॉन, सैम्युल, कमला, धनिया, सविता, मिस लिली आते हैं । 'संतरों की डाली' की कालिंदी देवी एक सुशिक्षित, सुचरित्र की संयत नारी है । पति दोषी होते हुए भी उसके प्रति कटु भावना उसके दिल में नहीं थी । एक सहिष्णु पतिव्रता नारी के रूप में उसका चित्रण किया है । लेखक ने उसके आदर्श चरित्रांकन के लिए परोक्ष और अवरोध दोनों शैलियों का उपयोग किया है । 'मिसेज सैम्युअल' जज साहब की पत्नी है । पत्नी के रूप में नारी सुलभ दुर्बलता और ईर्ष्या उसमें है । संदेह होने पर वह पति को डाँटती है तो संदेह के बादल दूर होने पर वह यह कहने में भूल ही नहीं करती कि - 'देखो सेमी, इस युवक की शादी में मैं इसे सिल्क का कपड़ा प्रेजेण्ट करूँगी ।' और कहीं उसने यह कह दिया कि उसकी प्रेमिका ने 'प्रेजेण्ट दिया है तब ?' क्या वाहियात मजाक करते हो ?' [2] मिसेस सैम्युल ने कहा । इस प्रकार जज दंपति का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में सफल हुए हैं ।

'अंधा प्रेम' की कमला दृष्टि सुख से वंचित परंतु मानसिक तृप्ति में सुखी एक युवती है । अंधी होकर स्वाभिमानी है - वह अपने पति से कहती है - 'जिस दिन भी मुझे लगा कि तुमने मुझपर दया करके, प्रेम याचना की है, तो मुझे इतना भयंकर क्लेश होगा जो मेरी आँखे फूटने पर भी नहीं हुआ था ।' [3] इस प्रकार कमला का चरित्र एक मनोवैज्ञानिक चित्रण है । 'पराई औरत' की धनिया एक देहाती स्वाभिमानी औरत का चित्रण है तो 'नीला लिफाफा' की सविता, जज साहब का ओवरकोट' की मिस जॉन, तलाक का पत्र, की मिस लिली आधुनिक मनमौजी युवतियों के चरित्र चित्रण हैं ।

---

[1] शेवडे - घडी की चोरी - (संतरो की डाली) - पृ. ९५
[2] शेवडे - जज साहब का ओवरकोट - (संतरो की डाली) - पृ. २०
[3] शेवडे - अंधाप्रेम - (संतरो की डाली) - पृ. १०४

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

६) अंधविश्वासों पर व्यंग्य : शेवडेजी ने सामाजिक धार्मिक, रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों का व्यंग्यात्मक रूप से विरोध किया है । लेखक ने 'अण्डे के छिलके' में इन्हीं विचारों को कलात्मक रूप से उपस्थित किया है और अंधश्रद्धालु नारियों तथा पुरुषों पर व्यंग्य किया है । दुनिया हवाई जहाज - की रफतार से प्रगति कर रही है और हम यदि बैलगाडी पसंद करेंगे तो इसलिए जातीयता को गाढे में उतार कर, संकुचित दायरे से हमें बाहर आना होगा । लेखक ने बड़े व्यंग्यात्मक शब्दों में ब्राहम्ण नारियों पर आलोचना की है और कहा है - 'नयी लड़कियाँ कभी-कभी छिपे चोरी' सती सावित्री, सिनेमा देखने जाति हैं तो, वहाँ जाकर निकलता-बिलासी राजकुमारी । कितनी अज्ञानता और कूपमंडूकता है ।

निष्कर्ष :

शेवडे अपनी कहानियों में भारतीय परिवार, समाज और समाज राष्ट्र के प्रति विशेष सजग रहे हैं । उन्होंने मुख्यत: सामाजिक और पारिवारिक कहानियाँ लिखी हैं और अपनी कहानियों में भारतीय नारी विशेषताओं का बहुविध चित्रण किया है । नारी जाति को गौरवपूर्ण स्थान देकर भारतीय संस्कृति के अनुरूप शील, क्षमा और पतिपरायण गुणों से गौरव संपन्न किया है । उनकी कहानी साहित्य अल्प होते हुए भी गुणक्रम से विशेष स्थान रखता है । उनकी कहानियों में सामाजिक विकृतियों के प्रति स्वस्थ एवं सबल विद्रोही स्वर दिखाई पड़ता है । उन्होंने विशेषत: अपने साहित्य में सामाजिक और पारिवारिक विषयों को ही अपनाया है । शेवडेजी आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार हैं । अपने कहानी साहित्य में दांपत्य जीवन की सुख-दु:खमय स्थितियों की सहज एवं सुंदर झाँकियाँ प्रस्तुत की है । गाँधीवादी होने से उनकी कहानियों में मानवतावादी समस्याओं को ही प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है । खासकर शेवडेजी ने अपनी कहानियों में नारी पात्रों का सर्वांगीण चित्र उपस्थिति करते हुए, उनके बारे में संवेदना जाग्रत करने का यत्न किया है । उनकी कहानियों में अंडे के

Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

छिलके, कारा की देवी चरित्रहीन पराई औरत, डॉ, सुनीता आदि कहानियों में प्राय: आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को प्रमुखता से स्थान प्राप्त हो चुका है । वे राष्ट्रीयता के साथ जातीयता के विरोध में मत प्रकट करने में पीछे नहीं रहे, स्पष्ट गाँधीवादी चिंतक, विचारक होने के कारण उनका साहित्य नैतिकता में आदर्शवादी है । राजनीतिक, सामाजिक, मानवतावादी, गांधीवादी, रूढ़ियां तथा धार्मिकता नैतिकता की ओर इशारा करनेवाले शेवडेजी एक श्रेष्ठ लेखक हैं ।

सहायक ग्रंथ

१) शेवडे - पूर्णिमा

२) पाण्डेय शशिभूषण - नयी कहानी शिल्पगत प्रयोग

३) शेवडे - तलाक का पत्र

४) शेवडे - घडी की चोरी

५) शेवडे - जज साहब का ओवरकोट

६) शेवडे - अंधाप्रेम

७) लक्ष्मणदत्त गौतम - आधुनिक हिंदी कहानी - साहित्य में प्रगति चेतना

डॉ. जयलक्ष्मी एफ़.पाटील

सहायक प्राध्यापक

पी.जी. विभाग

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

धारवाड - ५८० ००१

ई-मेल : pjayalaxmi98@gmail.com

Ph.No. 9481835968

Copyright • 2020 Authors